श्वेतार्क गणपति साधना

श्वेतार्क मूल (जड़) में गणेश जी का वास होता है और यदि इस मूल को शास्त्रोक्त विधि से प्राप्त किया जाये और अपने घर में स्थापित किया जाये तो घर में सुख-समृद्धि छा जाती है। इस मूल का आकार कुछ-कुछ गणेश जी के आकार जैसा होता है जिसके कारण इसे श्वेतार्क गणपति कहा जाता है। कहा जाता है कि इस जड़ को यानी श्वेतार्क गणपति को अपने घर में स्थापित करके यदि नित्य पूजा-अर्चना की जाये और धूप-दीप की जाये तो इस मूल में गणेश जी वास करने लगते हैं और जातक का जीवन खुशियों से भर जाता है, उसकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होती है। आईये हम भी इस अद्भुत और शुभ फल देने वाले श्वेतार्क गणपति को आज ही अपने घर में स्थापित करें...!!

नेपाल अथवा मुख्यतः हिमालय की तराई प्रदेश में आक का एक छोटा-सा पौधा पाया जाता है। राजस्थान में भी आजकल यह पौधा यत्र-तत्र दिखाई देता है। यह नेपाल में 'आकुरो' राजस्थान में 'आकड़ों' संस्कृत में 'अर्क' कहलाता है। प्रायः इसके पत्ते हरे होते हैं तथा इस पर नीले रंग के छोटे-छोटे फूल लगते हैं जिन्हें कि अकडोडिया कहा जाता है। इसी की जाति का एक पौधा सफेद रंग का होता है और इसके पत्ते भी सफेद, व फूल भी सफेद होते हैं। हजारों पौधों में से कुछ पौधे सफेद रंग के होते हैं। यह आक मिलना सचमुच कठिन है। इसी श्वेत अर्क की जड़ को यदि अत्यन्त सावधानी के साथ निकाला जाये और जड़ की ऊपरी परत कई दिन तक पानी में भिगोए रखने के बाद सावधानीपूर्वक उखाड़ी जायें तो जड़ पर गणेश जी का उभरा हुआ चित्र दिखलाई देगा। आध्यात्म के क्षेत्र में इसे 'श्वेतार्क गणपति' कहते हैं। जिस परिवार में श्वेत अर्क के गणपति की नित्य पूजा होती है, उसके यहाँ जीवन भर ऐश्वर्य की कमी नहीं आती। जीवन के किसी भी क्षेत्र में वह असफल नहीं होता। धन-धान्य, समृद्धि का अटूट भण्डार रहता है। यही कारण है कि विभिन्न तंत्र-ग्रंथों में इसका विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है। परन्तु इतने प्रभावशाली, पूज्य और चमत्कारी श्वेतार्क गणपति जहाँ शत-प्रतिशत होते हैं, वहाँ इसके पौधे 1-2 प्रतिशत से भी कम पाये जाते हैं। हाँ, यह बात अलग है कि किसी-किसी क्षेत्र में आसानी से मिल जाते हैं।

मान्यता है कि श्वेतार्क मूल में गणेशजी का वास होता है और यदि शास्त्रोक्त-विधि से वह मूल प्राप्त करके घर में स्थापित की जाये तथा उसका दैनिक-पूजन हों, तो वह गणेशजी की भाँति उस घर-परिवार को श्री समृद्धि से सम्पन्न करके साधक की समस्त भौतिक- बाधाओं का शमन कर देती है। परन्तु प्रतिबन्ध यह है कि 'श्वेतार्क मूल' पूर्णतया शास्त्रीय तांत्रिक ढ़ंग से प्राप्त की जाए और तदनुसार ही उसका पूजन हो। पाठकों की सुविधा के लिए उसका विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

समय मुहूर्त-

श्वेतार्क-साधना में भी मुहूर्त्त अर्थात् समय (काल-वेला) का सर्वाधिक महत्व होता है। इसलिए सर्वप्रथम किसी स्थानीय पुरोहित, पण्डित से कोई शुभ-मुहूर्त्त मालूम कर लेना चाहिए।

जिस दिन रविवार हो और पुष्य-नक्षत्र चल रहा हो वह दिन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसे 'रविपुष्य-योग' कहते हैं। रविपुष्य-योग किसी भी साधना को प्रारम्भ करने के लिए सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त होता है। इसी प्रकार गुरूपुष्य-योग (गुरूवार के दिन पुष्य-नक्षत्र की स्थिति) भी अतिउत्तम मानी गयी है। ज्योतिष-मर्मज्ञों की धारणा है कि जड़ी-बूटी आदि-वस्तुओं का संकलन, उनकी पूजा, प्रयोग आदि रविपुष्य के दिन विशेष फलदायी रहते हैं। जप, तप, हवन, पूजन, व्यापारिक कार्य तथा अन्य शुभ कार्य 'गुरूपुष्य' के दिन प्रारम्भ करने से निश्चित सफलता प्राप्त होती है। वैसे, जिस दिन भी पुष्य-नक्षत्र हो, वह सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त्त बन जाता है। ऐसे किसी शुभ-मुहूर्त्त का पता पहले से लगा लें और नियमानुसार 'श्वेतार्क-साधना' प्रारम्भ करें।

श्वेतार्क-प्राप्ति विधि-

यह एक विचित्र, सत्य, किन्तु दुर्लभ संयोग है कि कभी-कभी 'श्वेतार्क-मूल' ठीक गणेशजी की प्रतिमा के रूप में प्राप्त होती है। जड़ का मुख्य भाग 'तना' गणेशजी की स्थूल-काया जैसा होता है और उससे निकली शाखा जड़ें भुजाओं और शुण्ड (सूँड़) की रचना करती है। कोई-कोई जड़ बैठी हुई गणेश-प्रतिमा जैसी लगती है। प्रायः सूँड की आकृति तो जड़ में अवश्य ही मिलेगी, ऐसा निश्चित है। प्राप्त जड़ को गौर से देखें तो लगता है- किसी हाथी की सूँड है और आस-पास भुजाएं हैं।

पूजन विधि-

श्वेतार्क-मूल प्राप्त हो जाने पर उसे साफ करके शुद्ध जल से स्नान करायें (धोलें) फिर लाल कपड़े पर स्थापित करके उसकी पूजा करें। पूजा में लाल चन्दन, अक्षत, लाल पुष्प, सिन्दूर का प्रयोग किया जाता है। धूप-दीप देकर, नैवेद्य के साथ कोई सिक्का भी अर्पित करें। इसके पश्चात् गणेशजी का नीचे लिखें मंत्रों में से कोई मंत्र जपें।

(1) ऊँ गं गणपतये नमः (2) ऊँ ग्लौं गणपतये नमः
(3) श्री गणेशाय नमः (4) ऊँ भालचन्द्राय नमः
(5) ऊँ एकदन्ताय नमः (6) ऊँ लम्बोदराय नमः।

मंत्र-जप आरम्भ करने के पूर्व संकल्प कर लेना चाहिए कि मैं इतनी संख्या में जप करूंगा। मंत्र जाप के लिए लाल माला, रूद्राक्ष की माला अथवा मूँगे की माला का प्रयोग करना चाहिए। माला में 108 दाने होते हैं। अतः 10 माला जप का अर्थ हुआ- 1000 मंत्र-जप! इसी प्रकार पूर्व गणना करके निश्चित संख्या में माला द्वारा मंत्र का जप करें। 'श्वेतार्क-मूल' को साक्षात् गणेशजी मानकर, जो व्यक्ति यह तांत्रिक-साधना करता है, वह ज्ञान, सम्पति, सुरक्षा और निर्विघ्न-शान्ति प्राप्त करता है।

विविध प्रयोग-

विशेष रूप से, 'श्वेतार्क-मूल' जिन उद्धेश्यों की पूर्ति में प्रयुक्त होता है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :- स्वास्थ्य, सुरक्षा, वशीकरण-तिलक, लेखनी, स्तम्भन (मैथुनिक), सौभाग्य वृद्धि, व्याधि शमन आदि। यहाँ संक्षेप में उक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 'श्वेतार्क-मूल' की प्रयोग विधियाँ दे रहा हूँ-

श्वेतार्कमूलं पुष्यार्क समुद्धत्य विधारयेत्।
बाहुभ्यां धारणात्तस्य तृनिष्ठानि विशेषतः।।
तद्दर्शनेन नश्यन्ति डाकिनीप्रेतदानवाः।
तद्धूपेन पलायन्ते प्रेताद्या दूरतो ध्रुवम्।।
(डामर तंत्र से)

केवल श्वेतार्क की जड़ में प्राप्त प्रकृति-निर्मित गणपति विग्रह ही नहीं, यदि श्वेतार्क की जड़ या उसका कोई अंश भी प्राप्त हो जाए तो वह भी तंत्र ग्रंथों में महत्वपूर्ण मानी गयी है। संयोग से जब कभी रवि-पुष्य नक्षत्र हो तब ऐसे श्वेतार्क की जड़ उखाड़कर कर उसे बांह में धारण करने से कई प्रकार के अनिष्ट समाप्त हो जाते हैं और ऐसे व्यक्ति से डाकिनी, प्रेत, दानव दूर ही रहते हैं। ऐसे जड़ की धूप देने से घर में प्रेत-बाधा भी समाप्त होती है।

सुरक्षा आधि-व्याधि तथा भौतिक-दैविक बाधाओं से रक्षा के लिए 'रवि-पुष्य' योग में विधिवत् प्राप्त की गयी 'श्वेतार्क जड़' की विधिपूर्वक पूजा करें। फिर उसे (एक छोटा टुकड़ा) किसी भी रूप में (ताबीज, कवच, यंत्र आदि में) धारण कर लें। यह प्रयोग समस्त बाधाओं, भूत, प्रेत, डाकिनी, नजर, टोना, तंत्र प्रयोग आदि से पूरी सुरक्षा करता है।

आकर्षण तिलक-

शुभ मुहूर्त्त में विधिवत् प्राप्त करके, पूजित 'श्वेतार्क-मूल' से आकर्षण का भी प्रयोग किया जाता है। उसकी सरलतम विधि यह है कि गाय का घी, गोरोचन और श्वेतार्क-मूल की पहले से व्यवस्था करके रखें। जिस दिन 'रविपुष्य' योग हो, स्नान-पूजा से निपट कर, श्वेतार्क-मूल को घी और गोरोचन के साथ पत्थर पर चन्दन की भाँति घिसें। फिर अपने इष्टदेव और गणेशजी का ध्यान करते हुए माथे पर, यह लेप तिलक की भाँति लगा लें। यह तिलक आकर्षणकारी होता है।

एक प्रयोग और है-बकरी के मूत्र में 'श्वेतार्क-मूल' को घिस कर, (रविपुष्य-योग) माथे पर तिलक की भाँति लगायें। यह तिलक भी सम्मोहन का प्रभाव उत्पन्न करता है।

सौभाग्य वृद्धि-

नाभि पर 'कमल-पत्र' और दायीं भुजा पर 'श्वेतार्क-मूल' रविपुष्य के दिन धारण करने से सौभाग्य की वृद्धि होती है।

गृह रक्षा-

'श्वेतार्क' का पौधा 'रविपुष्य' योग में यदि घर के दरवाजे पर (लॉन, सहन, फुलवाड़ी, चबूतरे के कौने में- किसी भी ऐसी जगह पर, जहाँ से वह घर के प्रवेश-द्वार की सीध में हो, अर्थात् घर के प्रवेश-द्वार से पौधे को देखा जा सकें) लगा दें। पौधे के लिए उपयुक्त मिट्टी, प्रकाश, वायु और जल की समुचित व्यवस्था कर दें। यह प्रयोग गृह-रक्षा में बहुत सहायक सिद्ध होता है। जब तक वह पौधा रहेगा, घर में किसी भी आधि-व्याधि, नजर-टोना, तंत्र-मंत्र के दुष्प्रभाव और अवांछित वायव्य आत्माओं, दुर्भाग्य और दुष्ट-ग्रहों की वृद्धि का प्रभाव नहीं पड़ेगा। श्वेतार्क पौधे के प्रभाव से घर का प्रवेश-द्वार सुरक्षित हो जाता है।

शरीर रक्षा-

'श्वेतार्क-मूल' का टुकड़ा बाजु या कण्ठ में धारण करने से शरीर की सुरक्षा रहती है। आकस्मिक-आपदाएं और भूत-प्रेत, नजर-टोटका आदि का प्रभाव उस व्यक्ति को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

इसके अतिरिक्त भी कुछ और श्वेतार्क गणपति के उपयोगी प्रयोग हैं जो इस प्रकार हैं-

(1) श्वेतार्क गणपति का तात्पर्य है-सफेद आक से निर्मित गणपति, जिसके घर में श्वेतार्क गणपति है उसके घर में दरिद्रता रह ही नहीं सकती।

(2) श्वेतार्क गणपति के सामने यदि "ऊँ गं गणपतयै नमः" मंत्र की एक माला मंत्र जप किया जाये, तो निश्चय ही ऐसे जातक के जीवन में उन्नति होती रहती है।

(3) धन-धान्य सुख-सौभाग्य ऐश्वर्य और प्रसन्नता के लिये श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह होता ही नहीं है, जिसे घर में स्थापित किया जाये।

(4) जिसके घर में दरिद्रता हो और प्रयत्न करने पर भी आर्थिक उन्नति नहीं हो, उसे अवश्य ही घर में श्वेतार्क गणपति स्थापित करना चाहिये।

(5) जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिये श्वेतार्क गणपति अत्यन्त अद्वितीय है।

(6) श्वेतार्क-गणपति का अर्थ है आक से निर्मित गणपति। जहाँ पर अथक प्रयासों के बावजूद किसी कार्य में सफलता नहीं मिल पा रही है, दरिद्रता दामन नहीं छोड़ रही हो तो उस व्यक्ति को "श्वेतार्क गणपति" जरूर स्थापित करना चाहिए। इस प्रयोजन का ये सबसे सरलतम उपाय है। नित्य प्रवाल माला से निम्न मंत्र का एक माला जाप करें।

मंत्र- ॐ गणपतयै नमः।।

श्वेतार्क गणपति को सदैव अपने घर में रखें। यदि संभव हो तो नित्य दूर्वा (हरि दूब या घास) अर्पित करें।

गणेश चतुर्थी के प्रयोग

(1) जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति सौभाग्य, श्रेष्ठता और पूर्णता प्राप्त करने के लिए श्वेतार्क गणपति अत्यन्त अद्वितीय है, श्वेतार्क गणपति के संबंध में यहां तक कहा गया है कि धन-धान्य, सुख-सौभाग्य, ऐश्वर्य और प्रसन्नता प्राप्ति हेतु श्वेतार्क गणपति से श्रेष्ठ और कोई विग्रह नहीं, इस विग्रह का घर, प्रतिष्ठान में स्थापित होना ही पर्याप्त है। इसे पूजा स्थान में स्थापित करें। इस मंत्र की नित्य एक माला जपे तो सोने में सुहागा साबित होगा।

मंत्र- "ॐ गणायै पूर्णत्व सिद्धिं देहि देहि नमः"

(2) इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति जीवन के समस्त कर्जों से छुटकारा पा लेता है एवं दरिद्री जीवन से मुक्त हो जाता है। इस साधना हेतु साधक को सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा में मुंह करके बैठना चाहिए। सामने बाजोट पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर चावल की ढेरी करें फिर उस पर "श्वेतार्क गणपति" स्थापित कर कुंकुम, चावल, मोली से पूजा करे व धूप-दीप करें। गणपति को सिंदूर अर्पित करें। फिर प्रवाल की माला से निम्न जाप करें।

मंत्र- ॐ नमो विघ्नहराय गं गणपतये नमः।।

इस मंत्र की 5 माला जाप करे एवं सामग्री को (श्वेतार्क गणपति एवं मूंगे की माला) लाल कपड़े की पोटली में बांध लें। गणेश चतुर्थी के दिन पोटली गणपति मंदिर में जाकर गणेशजी के चरणों में रखकर दरिद्रनाश की प्रार्थना करें व घर चले आये।

(3) श्वेतार्क गणपति के मूल को लाकर जलाया जाये और उसकी राख से सभी को तिलक किया जाये तो वह तिलक लक्ष्मी को आकर्षित करने वाला होता है। इसकी राख को बचाकर रखा जाये और जब कभी आर्थिक संकट दिखाई देने लगे इसका तिलक किया जाये तो आर्थिक समस्याएँ समाप्त होने लगती है।

न्यौछावर राशि- श्वेतार्क गणपति 1500रु. से आरम्भ
आकृति अनुसार तथा प्रवाल माला 450 रु.

सारांश यह कि 'श्वेतार्क-मूल' एक बहुत ही पवित्र, प्रभावी और शुभफलदाई पौधा है। इसकी 'जड़' के भी सैकड़ों प्रयोग प्राप्त होते हैं। यह श्री-सौख्य, सुरक्षा, समृद्धि, सौभाग्य और आस्तिकता की भावना देती है। जो साधक विधिवत् इसकी पूजा करते हैं। वे अवश्य ही सफल-मनोरथ होते हैं।

♦♦♦

बुद्धि, वैभव, विलास प्राप्ति हेतु तांत्रोक्त गणपति साधना

महागणपति न केवल अपने स्वरुप में पूरी तरह से तांत्रोक्त हैं वरन् महागणपति को आधार लेकर 'गाणपत्य तंत्र' की एक पूरी पद्धति है जो किसी भी अन्य पद्धति से कम तीव्र या कम फलदायक नहीं है। तंत्र की पद्धतियों की विशेषता होती है कि जहाँ मंत्र के माध्यम से किसी देव की प्रार्थना की जाती है वहीं तांत्रोक्त पद्धति के अन्तर्गत गणपति पूजन को तांत्रोक्त ढंग से सम्पन्न करने की दशा में उन्हें 'महागणपति' की संज्ञा से विभूषित कर उसकी समस्त शक्तियों गौरी, सिद्धि, बुद्धि, सरस्वती, कुबेर के साथ आह्वाहित एवं स्थापित कर लाभ प्राप्त करने की क्रिया सम्पन्न की जाती है।

साधना विधान-

तांत्रोक्त गणपति साधना में लाल रंग का विशेष अर्थ है। किसी भी बुधवार की रात्रि में लाल वस्त्र बिछाकर स्वयं भी लाल वस्त्र धारण कर लाल कम्बल के आसन पर बैठें। साधक का मुंह दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। तांत्रोक्त रुप से चैतन्य किया गया महागणपति यंत्र, तांत्रोक्त नारियल, वैश्रव्य एवं सरस्वती लॉकेट इस साधना की आवश्यक सामग्री है। मंत्र जप केवल प्रवाल माला से ही करने का विधान है। इसके अतिरिक्त घी का दीपक, चन्दन, केशर, सुगन्धित पुष्प, धूप, नैवेद्य, यज्ञोपवीत, सुंगधित द्रव्य, दूर्वा इस साधना में अन्य प्रमुख सामग्री है। सामने लाल वस्त्र के मध्य में पुष्प पंखुड़ियों अथवा चावलों की ढेरी पर महागणपति यंत्र की स्थापना कर दायीं ओर चावलों की एक ढेरी पर लघु सुपारी रख ऋद्धि की तथा बांयी ओर इसी प्रकार सिद्धि की स्थापना करनी चाहिए। सामने वैश्रव्य की एवं उसी के बाईं ओर सरस्वती लॉकेट की भी स्थापना पुष्प की ढेरी पर करनी चाहिए। मां गौरी का पूजन महागणपति यंत्र पर ही करने का विधान है। सर्वप्रथम संक्षिप्त गणपति पूजन करें और चंदन आदि यंत्र पर समर्पित करें। तथा इसी यंत्र पर गौरी पूजन भी सम्पन्न कर, ऋद्धि-सिद्धि का पूजन केवल कुंकुम व पुष्प की पंखुड़ियों से करें। वैश्रव्य- जो कि कुबेर का स्थापन है, इसका पूजन सुगंधित द्रव्य से करें एवं सरस्वती पूजन श्वेत पुष्पों व केशर की पंखुड़ियों से करें। इसके पश्चात् प्रणाम कर अपनी मनोकामना एवं सर्वप्रकारेण उन्नति की प्रार्थना सभी देवी-देवताओं की स्थापना का आग्रह करते हुए प्रवाल माला से निम्न मंत्र का जप करें-

मंत्र : ऊँ गं ह्रीं श्रीं गणपतये नमः।

इस मूल मंत्र की केवल पांच माला मंत्र जप करना ही पर्याप्त माना गया है, मंत्र जप के उपरान्त यंत्र पर तांत्रोक्त नारियल चढ़ाकर भगवान गणपति से अपनी रक्षा की प्रार्थना कर स्थान छोड़ें। दूसरे दिन प्रातः महागणपति यंत्र को पूजन में स्थापित कर दें। सरस्वती लॉकेट गले में धारण कर लें तथा वैश्रव्य को धन रखने के स्थान पर रख दें। प्रवाल माला तथा तांत्रोक्त नारियल को विसर्जित कर दें, जिससे समस्त अशुभ समाप्त हो। यह एक दिन का प्रयोग वास्तव में महागणपति की अपने घर में स्थापना ही है।

साधना सामग्री न्यौछावर- 2500/-

दैनिक जीवन में गणेशजी का महत्व

देश में शायद ही ऐसा कोई हिंदू-परिवार होगा, जहां श्रीगणेशजी की पूजा न होती हो। सभी हिंदू-परिवारों में श्रीगणेशजी की पूजा व्याप्त है। 'गणेश' शब्द का विग्रह है-गण+ईश। 'गण' का अर्थ देवताओं का समूह और 'ईश' का अर्थ उसका स्वामी' है। अतः 'गणेश' का अर्थ हुआ 'देवताओं के समूह का स्वामी' जो परमपिता परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई हो ही नहीं सकता। अतःएव गणेश की पूजा से हम प्रभु परमेश्वर की ही पूजा करते हैं।

श्री गणेशजी के पिता जगद्विख्यात श्री शिवजी हैं। इनकी माता जगतजननी श्री पार्वतीजी हैं और इनके भाई युद्धविद्या विशारद श्री कार्तिकेयजी हैं। ऐसे छोटे और महान् परिवार के एक सदस्य श्रीगणेशजी हैं। इनके विषय में केवल इतना ही संकेत करना आवश्यक होगा कि यदि महाभारत के रचयिता श्री वेदव्यास को श्री गणेशजी जैसा लिखनेवाला न मिला होता तो यह असम्भव था कि महाभारत जैसा महान् ग्रंथ आज हम लोगों को देखने को मिला होता। श्रीगणेशजी के गुणों की महत्ता को समझते हुए ही अपने शास्त्रकारों ने इनकी पूजा को प्रथम स्थान दिया है।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

सभी हिन्दू-परिवारों में बच्चों को जब विद्या-आरम्भ करायी जाती है, तब उनसे गणेशजी का पूजन कराया जाता है, जिससे भविष्य में बच्चा खूब पढ़े, इच्छानुकूल विद्या प्राप्त करे, परीक्षा में उत्तीर्ण हो और वह श्रेष्ठ विद्वान बने। ठीक उसी प्रकार विवाह के लिये भी पद-पद पर गणेश-स्वरण होता है, जिससे वर या कन्या के मनोनुकूल जोड़ा मिले, भविष्य में दोनों का जीवन सुखी हो और वे योग्य संतान प्राप्त करें। ठीक इसी प्रकार घर से बाहर जाने के समय प्रायः गणेश-स्मरण किया जाता है, जिससे यात्रा सानन्द सम्पन्न हो। व्यापार-व्यवसाय के आरम्भ करने के पूर्व भी गणेशजी की वन्दना की जाती है, जिससे लाभ हो। किसान तो गणेशजी को याद करना भूलते ही नहीं। गणेश-चतुर्थी के दिन उनके मन्दिरों में पूजा के घड़ी-घंट बजते ही हैं। इस प्रकार श्रीगणेशजी जीवन मे प्रत्येक कार्य में हमारे साथ रहते हैं और उनकी कृपा से हम मंगल को प्राप्त करते हैं।